पेरिस
दिसम्बर २८, २००७

सन्देश संख्या १३२

सूफी–विस्फोट

न रहबर,
न रफीके सफर,
न जाने किस राह पर;
रवाँ हो गए हैं हम ।
इस बेखुदी की हालत में,
न जाने क्यों, खुदा ही
हो गए हैं हम ।

न कोई साथी है, न कोई पथ–प्रदर्शक है और न ही कोई दिशा या उद्देश्य है । फिर भी मैं एक विस्मयकारी यात्रा पर चल पड़ा हूँ किन्तु मुझे इस मार्ग के बारे में पहले से कुछ भी पता नहीं है । और इस पूर्ण 'निर्–मैं'' की अवस्था में, ''मुझे'' आश्चर्य होता है कि ''मैं'' का आनन्दमय दिव्यता में कैसे विलय हो गया है ।

यह आश्चर्य है कि ऐसे सूफी–विस्फोट अभी भी विद्यमान हैं जबकि ये उसी सम्प्रदाय से निकले हैं जो अंधविश्वासों के बन्धन और बोझ से ग्रसित है तथा जिसने ऐसे धर्मान्ध एवं उन्मत्त कट्टरवादियों को उत्पन्न किया है जो इस्लाम (जिसका अर्थ है– शांति) धर्म के नाम पर तथा मुल्लाओं एव इमामों की आसुरी मगज धुलाई से प्रभावित होकर अधिकाधिक आतंकवाद और हत्याओं द्वारा भय, घृणा एवं तबाही लाते हैं और बदले में मुल्ला एवं इमाम उन्हें मरणोपरान्त अल्लाह–मिलन तथा स्वर्ग में विलासितापूर्ण एवं सुखमय जीवन का वादा करते हैं।

सूफी सम्प्रदाय के महान संत अल–हल्लाज अली मन्सूर का जब चैतन्य के अद्वैत–वेदान्त आयाम में विस्फोट हुआ और उन्होंने 'अनल हक' की पवित्र घोषणा की। तब अपने ही साथियों एवं सहधर्मावलम्बियों द्वारा उनकी नृशंस हत्या कर दी गई और यह मान लिया गया कि सूफी-दर्शन हमेशा के लिए समाप्त हो गया। किन्तु यह अभी भी जीवित है । अनुबन्धनों एवं अन्य सांस्कृतिक संस्कारों के प्रदूषणों से मुक्त निर्दोष मानव–चेतना की ऐसी ही दिव्य क्षमता होती है ।

मिथ्या ''मैं'' की दुष्ट प्रवृत्ति में न फँसें बल्कि अन्तर्चेतना में दर्शक (कर्त्ता) और दृश्य (कर्म) के द्वैत के परे केवल दर्शन की प्रज्ञा में रहें । यह आधारभूत अद्वैत ही घनीभूत होकर गहन उत्परिवर्तन (मौलिक रूपान्तरण) लाता है जिसमें चित्त ''मैं'' की विभेदकारी प्रक्रिया समाप्त हो जाती है और इसलिए ईश्वर तथा स्वर्ग के रूप में स्थित उसके चरम लोभ एवं तुष्टीकरण का भी अन्त हो जाता है । तभी पवित्र पूर्णता की विराट शून्यता में ''अज्ञेय'' का अस्तित्व होता है जो गीता, कुरान तथा पुराने या नये टेस्टामेंट के पहुँच के परे हैं ।

।। जय सूफी विस्फोट ।।